बपतिस्मे में हम ज़्या करते हैं?

बपतिस्मे में चार अवधारणाएं हैं जिनकी समझ हमें बपतिस्मा लेते समय होनी ज़रूरी है। इन अवधारणाओं से हमें पता चलता है कि हमारे मसीही बनने के समय ज़्या होता है।

हम देते हैं

बपतिस्मा लेते समय, हमें विश्वास से अपने आपको परमेश्वर के हाथों में सौंपना आवश्यक है ताकि वह हमारे जीवनों में सुधार ला सके (कुलुस्सियों 2:12)। इस समय, हमें परमेश्वर के वचन पर ध्यानपूर्वक विचार करना आवश्यक है (यूहन्ना 6:45; प्रेरितों 18:8)। अपने आपको यीशु को समर्पित करने का निश्चय करके, हम धार्मिकता के सेवक बनने के लिए संसार की सेवा करना छोड़ देते हैं (रोमियों 6:17,18)। हमें मुंह से भी गवाही देनी आवश्यक है कि हम अपने मनों में विश्वास करते हैं कि यीशु ही प्रभु, मसीह अर्थात परमेश्वर का पुत्र है (रोमियों 10:9,10)। बपतिस्मे में हमें अपने आपको यीशु को देना आवश्यक है ताकि अपने अतीत से मरकर हम उसके लिए एक नये जीवन में प्रवेश कर सकें (रोमियों 6:4)।

हमें मिलता है

यदि हम अपने आपको इस प्रकार सौंप देते हैं, तो हमें यीशु के लहू द्वारा उपलज्ध करवाई गई परमेश्वर की क्षमा प्राप्त होगी (प्रेरितों 2:38; कुलुस्सियों 2:12,13; इब्रानियों 9:22)। उसका लहू हमारे पाप धो देगा (प्रेरितों 22:16; प्रकाशितवाज़्य 1:5) और हमें उद्धार देगा (मरकुस 16:15,16; 1 पतरस 3:21)। हम शुद्ध विवेक से पिछले पापों के धोए जाने के कारण एक नई शुरुआत कर सकेंगे (1 पतरस 3:21)। बपतिस्मा लेकर हम नये जीवन की शुरुआत करते हैं (रोमियों 6:4)।

हम बनते हैं

पाप मिटाए जाने के बाद, हम मसीह में नई सृष्टि बन जाते हैं (2 कुरिन्थियों 5:17)। नये सिरे से जन्म लेकर (यूहन्ना 3:3-5), हम परमेश्वर की संतान बन जाते हैं (गलतियों 3:26)। जब हम मसीह से एक हो जाते हैं (रोमियों 6:5), तो उसके साथ (इब्रानियों

3:14) उसके स्वज़ाव में सहभागी बन जाते हैं (2 पतरस 1:4; देखिए 2 कुरिन्थियों 5:21)। हम मसीह को ''पहन'' लेते हैं (गलातियों 3:27) और उसके स्वरूप में बदलकर उसके जैसे बनने लगते हैं (2 कुरिन्थियों 3:18)।

हम प्रवेश करते हैं

परमेश्वर की संतान बनकर, हम परमेश्वर के परिवार अर्थात, उसके घराने में आ जाते हैं जो उसकी कलीसिया है (1 तीमुथियुस 3:15)। कलीसिया को ही देह कहा जाता है। (इफिसियों 1:22, 23)। बपतिस्मा लेकर हम मसीह की एक देह (1 कुरिन्थियों 12:13,27) अर्थात उस कलीसिया में शामिल हो जाते हैं जिसे यीशु ने बनाया (मत्ती 16:18) और जिसका सिर वह स्वयं है (इफिसियों 5:23)। मसीह और उसकी देह में प्रवेश करने पर (रोमियों 6:3; गलतियों 3:27) हमें मसीह अर्थात सिर की ओर से सभी आशिषें मिलती हैं। इनमें सभी आत्मिक आशिषें (इफिसियों 1:3), जैसे नई सृष्टि बनना (2 कुरिन्थियों 5:17) शामिल हैं। उसमें, हमें यीशु के लहू, अनुग्रह, उद्धार और अनन्त जीवन के द्वारा छुटकारा मिलता है (इफिसियों 1:7; 2 तीमुथियुस 2:1; 2:10; 1 यूहन्ना 5:11)।

यीशु में आने से पहले, हम ''मसीह से अलग और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशारहित और जगत में ईश्वर रहित थे। पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो'' (इफिसियों 2:12, 13)। पाप ही हमें परमेश्वर से दूर करता है (यशायाह 59:1, 2) और अपना मुंह हम से छुपा लेता है (1 पतरस 3:12)। बपतिस्मा लेने पर, हम यीशु में आ जाते हैं (रोमियों 6:3; गलतियों 3:27)। हमारे पाप क्षमा कर दिए जाते हैं (प्रेरितों 2:38; प्रेरितों 22:16) और अब हम परमेश्वर रहित और यीशु से अलग नहीं रहते।